अभय और अमरत्व को प्रदान करनेवाला, मार्कण्डेय ऋषि द्वारा विरचित : मृत्युञ्जय-स्तोत्र

(सर्व-कल्याण-स्वरूप भगवान् शिव की सिद्ध साधना)

महर्षि मृकण्डु को कोई सन्तान न थी। उत्तम सन्तान हेतु उन्होंने पत्नी के सहित कठिन 'तप' किया। उनके तप से प्रसन्न होकर भगवान् शङ्कर प्रकट हुए। भगवान् शङ्कर ने कहा-"तुम्हें पुत्र की प्राप्ति होगी। यदि तुम गुणवान्, यशस्वी, ज्ञानी पुत्र चाहते हो, तो तुम्हें केवल १६ वर्ष की आयुवाले पुत्र की प्राप्ति होगी। इसके विपरीत, यदि तुम उत्तम गुणों से हीन, अज्ञानी पुत्र चाहते हो, तो तुम्हें चिरजीवी पुत्र की प्राप्ति होगी।"

भगवान् शङ्कर के उक्त वचन सुनकर महर्षि मृकण्डु ने हाथ जोड़कर कहा–'भगवन्! मैं लम्बी आयु वाला गुण-हीन, अज्ञानी पुत्र नहीं चाहता। आयु चाहे अल्प ही हो, मुझे तो गुण-सम्पन्न, ज्ञानी पुत्र ही चाहिए।'

महर्षि मृकण्डु की उक्त इच्छा को सुनकर भगवान् शङ्कर ने 'तथास्तु' कहा और वे अन्तर्धान हो गए।

कालान्तर में, भगवान् शङ्कर के वरदान से महर्षि मृकण्डु की पत्नी मरुद्वती गर्भवती हुईं। महर्षि ने शास्त्रानुसार सभी संस्कार किए। पुत्र के जन्म होने के पश्चात् भी महर्षि ने 'नाम-करण' से लेकर 'यज्ञोपवीत' तक सभी संस्कार किए। यज्ञोपवीत-संस्कार के बाद बालक मार्कण्डेय चारों वेदों का अध्ययन करने लगे। वे अत्यन्त शीलवान्, गुणी, ज्ञानी तथा माता-पिता की सेवा में तत्पर बालक थे।

बुद्धिमान् मार्कण्डेय की आयु का १६वाँ वर्ष जब आरम्भ हुआ, तब भगवान् शङ्कर के वचन का स्मरण कर महर्षि मृकण्डु व्याकुल हो उठे। बालक मार्कण्डेय ने महर्षि से व्याकुलता का कारण पूछा। महर्षि मृकण्डु ने बालक मार्कण्डेय से कहा–'बेटा! भगवान् शङ्कर ने तुमको १६ वर्ष की आयु दी है। १६ वर्ष की समाप्ति का काल समीप आ पहुँचा है, इसलिए मैं व्याकुल हूँ।'

पिता के वचन सुनकर धैर्य के साथ बालक मार्कण्डेय ने कहा- 'पिताजी! आप शोक न करें। मैं सर्व-कल्याण-स्वरूप भगवान् शङ्कर की उपासना कर, उन्हें प्रसन्न करूँगा और अभय, अमरत्व को प्राप्त करूँगा।'

पुत्र की बात सुनकर माता-पिता को बहुत सन्तोष हुआ। उन्होंने उसकी बात का समर्थन करते हुए, भगवान् शिव की महिमा का वर्णन किया और कहा– **'भगवान् शिव, ब्रह्मा आदि सभी देवताओं के एकमात्र कर्त्ता हैं। वे सम्पूर्ण विश्व के आश्रय-दाता और रक्षा करनेवाले हैं।** पुत्र! तुम उन्हीं की शरण में जाओ।'

माता-पिता की आज्ञा पाकर मार्कण्डेय जी दक्षिण समुद्र के तट पर चले गए और विधि-पूर्वक अपने ही नाम से **'मार्कण्डेय शिव-लिङ्ग'** की स्थापना कर पूजा करने लगे। पूजा के अन्त में वे 'मृत्युञ्जय-स्तोत्र' का 'पाठ' करके नृत्य करते थे। उनकी इस भक्ति से भगवान् शङ्कर अति सन्तुष्ट हुए।

सोलहवें वर्ष का अन्तिम दिन आने पर काल-देवता प्रकट हुए। वे मार्कण्डेय के प्राण-हरण करने के लिए उद्यत हुए। मार्कण्डेय ने उनसे कहा– 'महा-मते काल! जब तक मैं भगवान् शङ्कर के मृत्युञ्जय स्तोत्र का पाठ पूरा न कर लूँ, तब तक आप प्रतीक्षा करें।'

काल-देवता ने मार्कण्डेय की बात को हँस कर उड़ा दिया और अन्त में क्रोध में कहा– 'अरे दुर्बुद्धि ब्राह्मण! गङ्गा जी में जितने रज-कण हैं, उतने ब्रह्माओं का हमने संहार कर डाला है। मेरा बल और पराक्रम देखो। मैं तुम्हें अभी अपना ग्रास बनाता हूँ। तुम इस समय जिनकी शरण में बैठे हो, देखता हूँ, वे तुम्हारी रक्षा कैसे करते हैं?'

फिर जैसे राहु चन्द्रमा को ग्रस लेता है, वैसे ही गर्जना करते हुए काल ने हठ-पूर्वक मार्कण्डेय को ग्रसना प्रारम्भ किया। तब भगवान् शङ्कर उस लिङ्ग से सहसा प्रकट हो गए। उन्होंने हुङ्कार भर कर काल-देवता की छाती में लात मारी। उनके चरण-प्रहार से काल-देवता भयभीत हो उठे। काल-देवता को भयभीत देखकर बालक मार्कण्डेय स्व-रचित मृत्युञ्जय-स्तोत्र का पुनः उच्च स्वर से पाठ करने लगे। यथा—

रत्न - सानु - शरासनं रजताद्रि - शृङ्ग - निकेतनं
शिञ्जिनी-कृत - पन्नगेश्वरमच्युतानल - सायकम्।
क्षिप्र-दग्ध-पुर-त्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।१।।

जिन्होंने मेरु पर्वत को धनुष, सर्पराज को प्रत्यञ्चा तथा अमोघ अग्नि को अपना बाण बनाया, और त्रिपुर को शीघ्रता से दग्ध कर दिया, रजत-पर्वत के शिखर पर जिनका निवास है, देवता जिनकी वन्दना करते हैं, चन्द्रमा जिनका शिरोभूषण है, उन भगवान् शङ्कर का मैं आश्रय लेता हूँ। यमराज मेरा क्या कर लेंगे?१।।

पञ्च - पादप - पुष्प - गन्धि - पदाम्बुज-द्वय-शोभितं
भाल-लोचन-जात-पावक-दग्ध-मन्मथ-विग्रहम्।
भस्म-दिग्ध-कलेवरं भव-नाशिनं भवमव्ययं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।२।।

मन्दार, पारिजात, सन्तान, कल्प और हरिचन्दन—इन पाँच दिव्य वृक्षों के पुष्पों की गन्ध से वासित अपने दोनों चरण-कमलों से जो सुशोभित हैं, जिन्होंने अपने ललाटस्थ नेत्र से उत्पन्न होनेवाली अग्नि-ज्वाला से कामदेव के दिव्य शरीर को जला कर भस्म कर दिया, जिनकी देह पर भस्म मली हुई है, जो जन्म-मरण-रूप संसार-चक्र का नाश करने वाले हैं, उन अव्यय, भव, चन्द्रशेखर का आश्रय लेता हूँ। यम मेरा क्या कर लेंगे?२।।

मत्त - वारण - मुख्य - चर्म - कृतोत्तरीय - मनोहरं
पङ्कजासन- पद्म-लोचन-पूजिताङ्घ्रि-सरोरुहम्।
देव- सिद्ध- तरङ्गिणी- कर- सिक्त- शीत- जटा- धरं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।३।।

मतवाले गजेन्द्र के चर्म को अपना उत्तरीय बनाने पर भी जो अपने भक्तों का मन चुरा लेते हैं, कमलासन

ब्रह्मा और कमल-लोचन भगवान् विष्णु के द्वारा जिनके पाद-पद्म पूजित होते हैं, देवताओं और सिद्धों की तरङ्गिणी श्रीगङ्गा जी जिनकी शीतल जटाओं को निरन्तर सींचती रहती हैं, उन जटाधारी भगवान् चन्द्रशेखर का आश्रय लेता हूँ। यम मेरा क्या कर लेंगे?३।।

कुण्डलीकृत-कुण्डलीश्वर-कुण्डलं वृष-वाहनं
नारदादि - मुनीश्वर - स्तुत - वैभवं भुवनेश्वरम्।
अन्धकान्तकमाश्रितामर - पादपं शमनान्तकं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।४।।

कुण्डली मारे हुए नागराज को जिन्होंने अपना कुण्डल बना लिया है, वृषभनन्दी जिनके वाहन हैं, नारदादि मुनीश्वर जिनके वैभव की स्तुति करते रहते हैं, जो सम्पूर्ण भुवन-मण्डल के स्वामी हैं, अन्धकासुर का विनाश करनेवाले, देव-तरु का आश्रय लेने वाले, और मृत्यु का अन्त कर देने वाले उन चन्द्रशेखर का आश्रय ग्रहण करता हूँ। यम मेरा क्या कर लेंगे?४।।

यक्ष-राज-सखं भगाक्षि-हरं भुजङ्ग-विभूषणं
शैल- राज-सुता-परिष्कृत-चारु-वाम-कलेवरम्।
क्ष्वेड-नील-गलं परशवध-धारिणं मृग-धारिणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।५।।

जो यक्ष-राज कुबेर के सखा हैं, जो भग-देवता की आँख का हरण कर लेनेवाले हैं, भुजङ्ग जिनके आभूषण हैं, जिनके सुन्दर शरीर का वाम भाग शैल-राज-तनया की उपस्थिति से अलङ्कृत हो रहा है, गरल धारण करने के कारण जिनका गला नीला पड़ गया है, फरसे को धारण करनेवाले, मृग का पीछा करने वाले उन भगवान् चन्द्रशेखर का जब मैं आश्रय ले रहा हूँ, तो यम मेरा क्या बिगाड़ लेंगे?५।।

भेषजं भव - रोगिणामखिलापदामपहारिणं
दक्ष-यज्ञ-विनाशिनं त्रिगुणात्मकं त्रिविलोचनम्।
भुक्ति-मुक्ति-फल-प्रदं निखिलाघ-सङ्घ-निबर्हणं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।६।।

जो भव-रोग से पीडित जनों के लिए औषध-रूप हैं, समस्त आपदाओं को दूर करने वाले हैं, दक्ष के यज्ञ के विनाशक हैं, त्रिगुणात्मक हैं, तीन नेत्र वाले हैं, भोग और मोक्ष दोनों फल देने वाले हैं, समस्त पाप-समूह के विनाशक हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर का मैं अवलम्बन करता हूँ। यम मेरा क्या कर लेंगे?६।।

भक्त-वत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं
सर्व-भूत-पतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम्।
भूमि- वारि- नभो- हुताशन- सोम- पालित- स्वाकृतिं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।७।।

जो अर्चना करने वाले अपने भक्तों के प्रति वात्सल्य-भाव रखते हैं, भक्तों की अक्षय निधि हैं, दिशाएँ

ही जिनके वस्त्र हैं, समस्त भूतों के स्वामी हैं, परात्पर, अप्रमेय और अनुपम हैं, पृथ्वी जल आकाश अग्नि और सोम से जिनकी विश्व-रूप आकृति का पालन होता है, उन भगवान् चन्द्रशेखर का आश्रय लेता हूँ। यमराज मेरा क्या कर लेंगे?७।।

विश्व-सृष्टि-विधायिनं पुनरेव पालन-तत्परं
संहरन्तमथ प्रपञ्चमशेष-लोक-निवासिनम्।
क्रीडयन्तमहर्निशं गण-नाथ-यूथ-समावृतं
चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः।।८।।

जो पहले जगत् की सृष्टि का विधान करते हैं, फिर उसका पालन करने में तत्पर हो जाते हैं और अन्त में अशेष प्रपञ्च का संहार कर देते हैं, सम्पूर्ण लोकों में जिनका निवास है, जो गणाधिपों के समूह से घिरे रहकर रात-दिन क्रीडा करते रहते हैं, उन भगवान् चन्द्रशेखर का मैं आश्रय ग्रहण करता हूँ। यम मेरा क्या कर लेंगे?८।।

स्तोत्र का पाठ समाप्त होने पर भगवान् महा-देव ने बालक मार्कण्डेय को कल्पों तक की असीम आयु प्रदान की। वे 'अमर' हो गए। उन्होंने आश्रम लौटकर अपने माता-पिता को प्रणाम किया और उनसे भी आशीर्वाद लिया।

विशेष : वशिष्ठ जी के अनुसार जो कोई भगवान् शङ्कर की पूजा कर मार्कण्डेय जी द्वारा रचित उक्त स्तोत्र को पढ़ता है, उसे अभय की प्राप्ति होती है और उसके सभी सङ्कट नष्ट होते हैं।

अनेक लोगों द्वारा इससे लाभ उठाया जा चुका है। जो लोग असाध्य बीमारी, सङ्कट से त्रस्त हों, उन्हें इस स्तोत्र के नित्य पाठ से अवश्य लाभ उठाना चाहिए। प्रतिदिन इस स्तोत्र के पाठ से सभी प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

******

'कौल-कल्पतरु' चण्डी स्वामित्व-विवरण (प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट के अन्तर्गत)

१ प्रकाशन का स्थान ...... प्रयाग
२ प्रकाशन की अवधि ...... मासिक
३ मुद्रक का नाम ...... ऋतशील शर्मा
पता - परावाणी प्रेस, प्रयाग-६
४ प्रकाशक का नाम ...... ऋतशील शर्मा
५ सम्पादक का नाम ...... ऋतशील शर्मा
राष्ट्रीयता भारतीय
६ उन व्यक्तियों के नाम और पते, जो इस पत्रिका मालिक या साझेदार हैं....ऋतशील शर्मा/रजनी शर्मा

मैं ऋतशील शर्मा घोषित करता हूँ कि ऊपर दिए गए विवरण मेरी पूरी जानकारी विश्वास के अनुसार सही हैं।
— ऋतशील शर्मा (प्रकाशक)